

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्हणभरतशक्रहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये युद्धकाण्डे

॥ षट्षष्टितमः सर्गः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बुणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

॥ षट्षष्टितमः सर्गः ॥

कुम्भकर्णभयां पलायमानानां रानराणामङ्गदेन प्रोत्साहनमाराहनं
च कुम्भकर्णेन कपीनां संहारः पुनर्रानरसैनिकानां
पलायनमङ्गदेन प्रबोध्य तेषां पुनः प्रत्यारर्तनं च

स लङ्घयित्वा प्राकारं गिरिकुटोपमो महान्।
निर्ययौ नगरां तूर्णं कुम्भकर्णो महाबलः ॥ 6.66.1 ॥

ननाद च महानादं समुद्रमभिनादयन्।
रिजयन्निर निर्घातान् रिधमन्निर परतान् ॥ 6.66.2 ॥

तमरध्यं मघरता यमेन ररुणेन रा।
प्रेक्ष्य डीमाङ्गमायाङ्गं रानरा रिप्रदुङ्गबुः ॥ 6.66.3 ॥

ताङ्गु रिप्रद्रतान् दृष्ट्वा राजपुत्रोहङ्गदोहब्रवीत्।
नलं नीलं गराङ्गं च कुमुदं च महाबलम् ॥ 6.66.4 ॥

आङ्गनङ्गानि रिङ्गुत्य रीर्याङ्ग्यभिङ्गनानि च।
रु गङ्गत भयङ्गुः प्राङ्गुता हरयो यथा ॥ 6.66.5 ॥

साधु सौम्या निरर्तध्रं किं प्राणान् परिरङ्गथ।
नालं युङ्गाय रै रङ्गुता महतीयं रिडीषिका ॥ 6.66.6 ॥

महतीमुङ्गितामेनां राङ्गसानां रिडीषिकाम्।
रिङ्गमाद् रिधमिष्यामो निरर्तध्रं प्लरङ्गमाः ॥ 6.66.7 ॥

কৃচ্ছ্ৰেণ তু সমাশ্ৰস্য সঙ্গম্য চ ততস্ততঃ।
বৃক্ষান্ গৃহীৎরা হরযঃ সম্প্রতস্থু রণাজিরে ॥ 6.66.8 ॥

তে নিরর্ত্য তু সংরন্ধাঃ কুম্ভকর্ণং রনৌকসঃ।
নিজঘ্নুঃ পরমক্রুদ্ধাঃ সমদা ইর কুঞ্জরাঃ ॥ 6.66.9 ॥

প্রাংশুভির্গিরিশৃঙ্গৈশ্চ শিলাভিশ্চ মহাবলাঃ।
পাদপৈঃ পুষ্পিতাগ্রৈশ্চ হন্যমানো ন কম্পতে ॥ 6.66.10 ॥

তস্য গাত্রেষু পতিতা ভিদ্যন্তে বহরঃ শিলাঃ।
পাদপাঃ পুষ্পিতাগ্রাশ্চ ভগ্নাঃ পেতুমহীতলে ॥ 6.66.11 ॥

সোহপি সৈন্যানি সঙ্কুদ্ধো রানরাণাং মহৌজসাম্।
মমন্স্থ পরমাযত্তো রনান্যগ্নিরিরোথিতঃ ॥ 6.66.12 ॥

লোহিতাদাস্তু বহরঃ শেরতে রানরর্ষভাঃ।
নিরস্তাঃ পতিতা ভূমৌ তাম্রপুষ্পা ইর দ্রুমাঃ ॥ 6.66.13 ॥

লঙ্ঘযন্তঃ প্রধারন্তো রানরা নারলোকযন্।
কেচিৎ সমুদ্রে পতিতাঃ কেচিদ্ গগনমাস্থিতাঃ ॥ 6.66.14 ॥

রধ্যমানাস্তু তে রীরা রাম্ফসেন চ লীলযা।
সাগরং যেন তে তীর্ণাঃ পথা তেনৈর দুদ্রবুঃ ॥ 6.66.15 ॥

তে স্থলানি তদা নিম্নং রিরর্ণরদনা ভযাৎ।
ঋক্ষা বৃক্ষান্ সমারুঢাঃ কেচিৎ পর্তমাপ্রিতাঃ ॥ 6.66.16 ॥

মমজ্জুরর্ণরে কেচিদ্ গুহাঃ কেচিৎ সমাপ্রিতাঃ।
নিপেতুঃ কেচিদপরে কেচিন্নৈরারতস্থিরে।
কেচিদ্ ভূমৌ নিপতিতাঃ কেচিৎ সুপ্তা মৃতা ইর ॥ 6.66.17 ॥

তান্ সমীক্ষ্যাঙ্গদো ভগ্নান্ রানরানিদমব্রবীৎ।
অরতিষ্ঠত যুধ্যামো নিরর্তধ্বং প্লরঙ্গমাঃ ॥ 6.66.18 ॥

ভগ্নানাং রো ন পশ্যামি পরিক্রম্য মহীমিমাম্।
স্থানং সর্বে নিরর্তধ্বং কিং প্রাণান্ পরিরক্ষথ ॥ 6.66.19 ॥

নিরায়ুধানাং ক্রমতামসঙ্গগতিপৌরুষাঃ।
দারা হ্র্যপহসিষ্যন্তি স রৈ ঘাতঃ সুজীরতাম্ ॥ 6.66.20 ॥

কুলেষু জাতাঃ সর্বেহস্মিন্ রিস্তীর্ণেষু মহৎসু চ।
ক্ল গচ্ছত ভযত্রস্তাঃ প্রাকৃতা হরযো যথা।
অনার্যাঃ খলু যদ্বীতাস্ত্যক্কা রীর্যং প্রধারত ॥ 6.66.21 ॥

রিকখনানি রো যানি ভরদ্বির্জনসংসদি।
তানি রঃ ক্ল নু যাতানি সোদগ্রাণি হিতানি চ ॥ 6.66.22 ॥

ভীরোঃ প্রদাদাঃ শ্রযন্তে যস্ত জীরতি ধিক্কৃতঃ।
মার্গঃ সৎপুরুষৈর্জুষ্টঃ সের্যতাং ত্যজ্যতাং ভযম্ ॥ 6.66.23 ॥

শযামহে রা নিহতাঃ পৃথির্যামল্লজীরিতাঃ।
প্রাপ্নুযামো ব্রহ্মলোকং দুঃপ্রাপং চ কুযোধিভিঃ ॥ 6.66.24 ॥

অরাপ্নুযামঃ কীর্তিং রা নিহৎরা শক্রমাহরে।
নিহতা রীরলোকস্য ভোক্ষ্যামো রসু রানরাঃ ॥ 6.66.25 ॥

ন কুম্ভকর্ণঃ কাকুৎস্থং দৃষ্টরা জীরন্ গমিষ্যতি।
দীপ্যমানমিরাসাদ্য পতঙ্গো জ্বলনং যথা ॥ 6.66.26 ॥

পলাযনেন চোদ্দিষ্টাঃ প্রাণান্ রক্ষামহে রযম্।
একেন বহরো ভগ্না যশো নাশং গমিষ্যতি ॥ 6.66.27 ॥

এরং ব্রুৱাণং তং শূরমঙ্গদং কনকাস্গদম্।
 দ্রমাণাস্ততো ৱাক্যমূচুঃ শূৱরিগর্হিতম্ ॥ 6.66.28 ॥

কৃতং নঃ কদনং ঘোরং কুম্ভকর্ণেন রক্ষসা।
 ন স্থানকালো গচ্ছামো দযিতং জীৱিতং হি নঃ ॥ 6.66.29 ॥

এতারদুকত্না ৱচনং সর্ৱে তে ভেজিৱে দিশঃ।
 ভীমং ভীমাঙ্কমাযান্তুং দৃষ্টৱা ৱানৱযুথপাঃ ॥ 6.66.30 ॥

দ্রমাণাস্ত তে ৱীৱা অঙ্গদেন বলীমুখাঃ।
 সান্ধ্বনৈশ্চানুমানৈশ্চ ততঃ সর্ৱে নিৱর্তিতাঃ ॥ 6.66.31 ॥

প্রহর্ষমুপনীতাশ্চ ৱালিপুত্রেণ ধীমতা।
 আঞ্জাপ্রতীক্ষাস্তস্বুশ্চ সর্ৱে ৱানৱযুথপাঃ ॥ 6.66.32 ॥

ঋষভশৱভমৈন্দধুম্ননীলাঃ।

কুমুদসুষেণগৱাঙ্করম্ভতারাঃ।
 দ্বিৱিদপনসৱায়ুপুত্রমুখ্যা -
 স্তুরিততৱাভিমুখং ৱণং প্রযাতাঃ ॥ 6.66.33 ॥

॥ ইত্যার্ষে শ্রীমদ্রামাযণে ৱাল্মীকীযে আদিকাৱ্যে যুদ্ধকাণ্ডে ষট্‌ষষ্টিতমঃ সর্গঃ ॥